Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 2, Feb- 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.871
Received on : 14/02/2021 Accepted on : 26/02/2021 Publication Date: 28/02/2021

मुग़ल कालीन संस्कृत साहित्य : एक सर्वेक्षण

ऋचा

शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय.

e-mail - richabhu2015@gmail.com

भारत के अतुल्य वैभव एवं अत्यन्त उन्नत प्राचीन संस्कृति को सुनकर प्राचीन काल से ही वैदेशिक आक्रान्ताओं ने भारत पर आक्रमण किए हैं। इनमें से अधिकतर आक्रान्ताओं ने यहाँ विद्यमान अकूत सम्पत्ति को लूटा और नरसंहार किया और वापस चले गये, तथा कुछ ने यहाँ पर शासन करने का भी प्रयास किया। भारत में वैदेशिक आक्रमणों के इतिहास पर विचार किया जाये तो **३६५ ईसा पू.** में यूनानी शासक **सिकन्दर** ने आक्रमण किया, जिसका प्रभाव अफगानिस्तान तथा भारत के उत्तर-पश्चिमी भूभाग पर पड़ा था यद्यपि उसके सेनापति सेल्यूकस को चन्द्रगुप्त को यह सारा भूभाग वापस करना पड़ा । यूनान के ही अन्य शासक **डेमेट्रियस** (ईसा पू. २२० से १७५ ई,पू.) ने भी पंजाब का एक बड़ा भूभाग जीत लिया था।

मिनेन्डर (मिलिन्द ईसा पू. १६० से १२०) ने भी **बृहद्रथ** के समय में आक्रमण किया था तथा सिन्ध क्षेत्र को अधिकृत किया इन यूनानी शासकों के उपरान्त शकों ने भी भारत पर अनेक आक्रमण किए यद्यपि पुराणों में भी शकों का उल्लेख होने से इनकी प्राचीनता द्योतित होती है। शक राजाओं ने **गान्धार, सिन्ध, मथुरा, महाराष्ट्र** और **अवन्तिका** आदि क्षेत्रों में दीर्घकाल तक शासन किया। कुषाणों ने भी ६० ई. २४० ई. के मध्य अनेक आक्रमण किये। कुषाणों के प्रथम राजा कुजुल ने उत्तर-पश्चिमी सीमा पर बसे हुए पहल्लव राजाओं को पराजित कर अपना शासन स्थापित किया था, यद्यपि कुषाणों का साम्राज्य भारत से बाहर चीन मंगोल तजाकिस्तान तक फैला था। कुषाणों का सबसे शक्तिशाली सम्राट **कनिष्क** प्रथम था,इनका समय १२७ ई. से १५० ई. तक था। इसने आधुनिक पाकिस्तान से लेकर चीन तक अपना साम्राज्य विस्तार किया था। इसने नये पुष्पपुर (पाटलिपुत्र) जिसे आज **पेशावर** कहा जाता है, की भी स्थापना की।

भारत पर एक अन्य बर्बर आक्रमण हूणों के द्वारा हुआ, जिससे भारतीय संस्कृति एवं स्थापत्य को अत्यधिक नुकसान हुआ। हूणों के उपरान्त आठवीं शताब्दी के आरम्भ में मुस्लिम आक्रान्ताओं के आक्रमणों का आरम्भ हुआ। जिसमें **मो. बिन कासिम** ने इससे ई. सन् ७१२ ई. में सिन्ध पर आक्रमण किया तथा इससे पूर्व सन् ६३८ ई.-सन् ७११ ई. के मध्य **नौ खलीफाओं** के द्वारा **पन्द्रह बार** सिन्ध पर आक्रमण किया जा चुका था। तुर्कों ने सन् ९७० ई. में **महमूद गजनवी** के नेतृत्व में सन् **१०२६ ई.** तक **सत्रह बार** आक्रमण करके, अकूत सम्पत्ति लूटने के साथ अनेक धार्मिक स्थानों को भी हानि पहुँचायी।

इसके बाद भारत में तुर्क साम्राज्य के प्रथम संस्थापक **मोइजुद्दीन मो. गौरी,** जो कि गजनी और हेरात के मध्य स्थित छोटे से पहाड़ी प्रदेश का शासक था,जिसमें सन् ११७५ ई. से लेकर ११९४ ई. तक अनेक आक्रमण और युद्ध किए, जिनमें **ताराइन** का द्वितीय युद्ध जिसमें **पृथ्वीराज चौहान** को छलपूर्वक पराजित किया, तथा सन् ११९४ ई. में इसने **चन्दावर** के युद्ध में **जयचन्द** को पराजित करके अपने गुलाम **कुतुबुद्दीन ऐबक** को राज्य सौंपकर स्वयं गजनी चला गया था। तदुपरान्त गुलामवंश को समाप्त कर **खिलजीवंश** के शासकों ने यहाँ शासन किया। जिसमें **अलाउद्दीन खिलजी** सबसे शक्तिशाली शासक हुआ।

खिलजी वंश के बाद लोदीवंश जिसमें **इब्राहिम लोदी** सबसे शक्तिशाली था। जिसे पराजित करके बाबर ने मुगल साम्राज्य की स्थापना की। **बाबर, हुमायूँ तथा अकबर** का प्रारम्भिक काल युद्ध तथा धार्मिक कट्टरता से परिपूर्ण होने के कारण साहित्यसृजन अत्यल्प हुआ अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का मुख्य काल अकबर के उत्तरवर्ती शासनकाल से दाराशिकोह के कालपर्यन्त मुख्यरूप से व्याप्त है, तथापि मुस्लिम विद्वानों के संस्कृत अध्ययन के इतिहास को समझना यहाँ अप्रासंगिक न होगा; अतः मुस्लिमों द्वारा संस्कृत लेखन की परम्परा पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है, कि सर्वप्रथम जिस मुस्लिम ने संस्कृत भाषा का अध्ययन किया वे **रेहान मो. बिन अलबरुनी** थे, इनका जन्म सन् ९३१ ई. में **बीरुन** में हुआ था तथा १०३९ ई. में उनकी

मृत्यु हो गयी। **अलबरुनी** महमूद गजनवी के साथ बन्दी के रूप में भारत आए थे यहीं इन्होंने पण्डितों की सहायता से संस्कृत भाषा तथा उसमें विद्यमान अनेक ग्रन्थों का अध्ययन किया ज्योतिष विद्या में इनकी रुचि होने के कारण इन्होंने अनेक ज्योतिष ग्रन्थों की रचना अरबी भाषा में की इनकी '**किताब उल हिन्द**' नामक रचना भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में देखी जाती है।[1]

अलबरुनी सबसे पहला मुसलमान था जिसने संस्कृतभाषा को सीखा अपितु संस्कृत ग्रन्थों का गहन अध्ययन भी किया। इसने **योगसूत्र, ब्राह्मस्फुट सिद्धान्त** आदि ग्रन्थों का अरबी भाषा में अनुवाद किया। सहाय के अनुसार अलबरुनी ने सर्वप्रथम वराहमिहिर विरचित **बृहत्संहिता** का फारसी अनुवाद '**अलतनजीन**' नाम से किया।[2]

अलबरुनी की '**किताबउलहिन्द**' का अनुवाद प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् सहाय ने **'अलबरूनी इज इण्डिया'** नाम से किया है, अलबरुनी ने एक ज्योतिषग्रन्थ **'करण-तिलक'** का अनुवाद **'धुर्रतअलजीजात'** नाम से किया है।[3] इन्होंने अपनी '**इण्डिका**' में दर्शन, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, कालगणना, व्याकरण वेद, भूगोल आदि का विस्तार से वर्णन किया है। अलबरुनी ने वेदों में विशेषरूप से ऋग्वेद और अथर्ववेद का अध्ययन किया था। इसने अपने ग्रन्थ महाभारत और रामायण का भी गहन अध्ययन किया था।[4] अलबरुनी ने मुसलमानों के मूलभूत सिद्धान्त कलमा **"ला इलाहाइल्लललाह मुहम्मदुर्रसूल्लिलाह"** का संस्कृत अनुवाद किया और महमूद गजनवी को अपने सिक्के पर अनूदित किए कलमे को टांकने का सुझाव दिया। अतः अनूदित कलमे को "**अव्यक्तमेकम् अवतारमुहम्मदः"** इसके सुझाव पर महमूद गजनवी ने सिक्के पर टँकवा दिया।"[5]

फिरोजशाह तुगलक ने (सन् १३५१-१३८० ई.) में हिमाचल प्रदेश के प्राचीन स्थान **नागरकोट** पर विजय करके वहाँ की **ज्वालामुखी** नामक संस्कृत पुस्तकालय में उपलब्ध दुर्लभ हस्तप्रतिलिपि बृहत्संहिता के अनुवाद का आदेश दिया। **वराहमिहिर** की **बृहत्संहिता** का फारसी अनुवाद **इज्ज़तदीन ख़ालिद ख़ाफी** ने किया।[6]

फिरोजशाह तुगलक के आदेशानुसार **खालिद** के सङ्गीतशास्त्रीय ग्रन्थ, "**गुनियातुल मुनिया"** का फारसी भाषा में अनुवाद किया। फारसी भाषा में अनूदित ग्रन्थ की प्रतिलिपि **इण्डिया आफ़िस लाइब्रेरी** में उपलब्ध है।[7]

मुस्लिम विद्वानों की सूफी परम्परा में भी संस्कृत अध्ययन की प्रवृत्ति रहती है जिसमें **गेसूदराज** का नाम उल्लेखनीय है। इनका जन्म दिल्ली में १३ जुलाई सन् १३२१ में हुआ, था। इनका वास्तविक नाम **सैय्यद मोहम्मद सद्दीन मोहम्मद हुसैनी** था इन्हें लम्बे बालों के कारण गेसूदराज कहा जाता था। गुलबर्ग के **सुल्तान फिरोज बहमनी** द्वारा (सन् १३९७-१४२२ ई.) इन्हें भूमि इत्यादि सम्पत्ति भेंट की गयी थी । एक नवम्बर सन् १४२२ ई. को **गुलबर्ग** में ही इनकी मृत्यु हो गयी।[8] गेशूदराज प्रमुखरूप से अरबी भाषा के विद्वान थे, किन्तु उन्हें संस्कृत भाषा का भी अच्छा ज्ञान था। यद्यपि हिन्दू धर्म के खण्डन हेतु इन्होंने संस्कृत भाषा सीखी थी, और पण्डितों के साथ शास्त्रार्थ किया करते थे।

---

[1] को.आ. अन्तोनोवा, भारत का इतिहास, अनु. वेदों, पृष्ठ २९७

[2] एन.एस. शुक्ल, पर्शियन ट्रांसलेशन आफ संस्कृत वर्क्स स्टडीज इन इण्डोलोजी, रसिक बिहारी जोशी फेलिसिटेशन वाल्यूम, पृष्ठ १७५

[3] एस. फर्रूखजलाली एंड एस.एम. रज़ाउल्लाह अंसारी, पार्शियन ट्रांसलेशन ऑफ वराहमिहिरास बृहत्संहिता, स्टडीज इन हिस्ट्री ऑफ मेडिसिन एंड साइंस, भाग-१, न. ३-४ १९८५, पृष्ठ १६१

[4] अजय मिश्र शास्त्री, संस्कृत लिटरेचर नोन टू अलबरूनी, इण्डियन जनरल ऑफ हिस्ट्री ऑफ साइंस, भाग-१० (१९७५) पृष्ठ १११-१२०

[5] राधावल्लभ त्रिपाठी, (सं.) संस्कृत साहित्य को इस्लाम परम्परा का योगदान, में कृष्णदत्त वाजपेयी अभिलेखीय संदर्भ, पृष्ठ 3२

[6] जलाली एंड अंसारी, पर्शियन, ट्रांसलेशन ऑफ मिहिरराय वराहमिहिररास बृहत्संहिता, स्टडीज इन हिस्ट्री ऑफ मेडिशिन एंड साइंस, भाग-१, नं. 3-४, पृष्ठ १६१-१६९

[7] मिर्ज़ा, मुहम्मद यूसुफ, इन्फ्लूएन्स ऑफ इण्डियन साइंस आन मुस्लिमकलचर इस्लामिक कलचर (१९६२), पृष्ठ ११४

[8] अहमद, शाहीन, अकबरशाहकृत, पृष्ठ १-२

एक अन्य सूफी मुसलमान **मोहम्मद गौस** जिनकी कार्यस्थली ग्वालियर रही, ने भी **योगशास्त्र** पर संस्कृत में ग्रन्थ का प्रणयन किया। अब्बास रिजवी इन्हें प्रथम संस्कृत मुस्लिम लेखक मानते हैं जिसने योग पर ग्रन्थ लिखा।[9]

काश्मीर के मुस्लिम शासक **ज़ैनुल आब्दीन** (१४२३ ई.) की रुचि भी संस्कृत ग्रन्थों में अत्यधिक थी, इसने पण्डितों से **नीलमतपुराण** का अध्ययन किया, तथा योग वशिष्ठ को आधार बनाकर **शिकायत** नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया।[10] **जैनुल आब्दीन** का छोटा पुत्र **हैदरशाह** भी संस्कृत भाषा के प्रति आकर्षित था, उसने अपने अन्तिम दिनों में **महाकवि श्रीवर** से पुराण धर्मशास्त्र और मोक्षोपाय संहिता का अध्ययन किया तथा अपने पुत्र की शिक्षा हेतु श्रीवर से निवेदन किया जिस पर श्रीवर ने उसे बृहत्कथा पढ़ाया।[11]

हुमायूँ के दरबार में भी **ताजुलमा अली** ने हितोपदेश का फारसी अनुवाद '**मुफ़हुलकुलाब**' सन् १५२६ में करके हुमायूं को समर्पित किया। **शेरशाह सूरी** के समय में भी **मौलाना रिजकुल्लाह** ने '**रतनजोत**' और '**पैमेनजोत**' की रचना की।[12]

बीजापुर के **सुल्तान इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय** (१५००-१६२७ ई.) संस्कृतनिष्ठ शब्दों के प्रयोग के साथ फारसी भाषा में '**किताबे नवरस**' की रचना की जिसमें नाट्यशास्त्रीय विषयों के साथ हिन्दू देवी-देवताओं की स्तुतियाँ भी सम्मिलित हैं, तथा इसके मंगलाचरण में भी हिन्दू देवताओं की स्तुति की गयी है।[13]

अकबर के समय में भी **शेखभवन** नामक मुस्लिम लेखक ने **अल्लोपनिषद** की रचना की।[14] **अब्दुल कादिर बदायूंनी** ने सन् १५९० ई. में रामायण का फारसीभाषा में अनुवाद किया। नाक़िबखान और थानेश्वर के **शेखसुल्तान** ने भी रामायण का फारसी भाषा में अनुवाद किया। बदायूंनी ने शेखसुल्तान और फजी की सहायता से महाभारत का फारसी अनुवाद किया। इसकी प्रति इण्डिया आफिस लाइब्रेरी में उपलब्ध है।[15] **'राज़े-ए-मग़फ़िरत'** नामक ग्रन्थ भगवद्गीता का फारसी अनुवाद है[16] इसे फैजी ने अनूदित किया है जो अकबर के दरबारी कवि थे, इन्होंने बीजगणित के संस्कृत ग्रन्थ **लीलावती** का भी फारसी में अनुवाद किया।

अकबर के बाद जहाँगीर के समय में भी अनेक मुस्लिम विद्वानों ने संस्कृत भाषा के ग्रन्थों का अनुवाद पारसी भाषा में किया। निजाम पानीपती ने **अभिनन्दकृत योगवसिष्ठ** के आधार पर फारसी भाषा में **'कशफुल लुग़ते कुलियातेयोग'** की रचना की। जहाँगीर के ही शासनकाल में शेखसूफी ने योगवसिष्ठ का फ़ारसीभाषा में '**तोहफ़-ए-मजालिस**' और **कशफुलकुनूज़** किया।[17] अब्दुल रहमान चिश्ती ने महादेव और पार्वती की संवादात्मक शैली में फारसीभाषा में **'तरजुमा-ए-गोरक्षत'** अनुवाद सन् १६३१ ई. में किया, इसमें हिन्दू धर्म के रीति-रिवाजों की इस्लामधर्म के रीतिरिवाजों की तुलनात्मक ढंग से व्याख्या प्रस्तुत की है।[18]

---

[9] रिजवी, अब्बास अतहर, ए हिस्ट्री आफ सूफीज्म इन इण्डिया, पृष्ठ ६५

[10] त्रिपाठी, राधावल्लभ (सं.) संस्कृत साहित्य को इस्लाम परम्परा का योगदान, वेदकुमारी धई का लेख, पृष्ठ १००-१०२

[11] वही, पृष्ठ १०3

[12] मिज़ी, मो. यूसुफ- इन्फ्लूएन्स ऑफ इण्डियन साइंस ऑन मुस्लिम कलचर, इस्लामिक कल्चर भाग 3६ (१९६२), पृष्ठ ११४-११५

[13] अहमद, शाहीन, अकबरशाहकृत शृंगारम्जरी का आलोचनात्मक अध्ययन, पृष्ठ ११

[14] आर. नाथ, ऑन द आथर ऑफ अल्लोपनिषद, जनरल ऑफ ओरिएन्टल इन्स्टीट्यूट बड़ौदा, ग्टप्.3 (१९७४), पृष्ठ ८८

[15] मिर्ज़ामुहम्मद यूसुफ, इन्फ्लूएन्स ऑफ साइंस ऑन मुस्लिम कल्चर, इस्लामिक कल्चर, भाग-3६ (१९६२), पृष्ठ ११५-११६

[16] एन. शुक्ल, पर्शियन ट्रांसलेशन ऑफ संस्कृत वर्क्स स्टडीज इन इण्डोलोजी, पृष्ठ १८२

[17] वही

[18] वही

सम्राट शाहजहाँ के दरबार में **अहमद मेगार** के पुत्र **अताउल्लाह रसीदी** ने **भास्करअचरक** कृत बीजगणित का फारसी भाषा में अनुवाद किया। **औरङ्गजेब** के समय में **हिम्मतखान** ने **राजा कामरूप** और **रानी कमललता** के प्रेमाख्यान को फारसीभाषा में अनूदित किया। **अब्दुल रहमान चिश्ती** ने श्रीमद्भगवद्गीता को **मीरतुल हकीक** को फारसीभाषा में अनूदित किया इन्होंने ही धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों का अनुवाद फारसीभाषा में मीर **तुलमखलूक** नाम से किया।

औरङ्गजेब के दरबार में सङ्गीत शास्त्रीय ग्रन्थों **रागदर्पण** और **रागसागर** का फारसी अनुवाद सन् १६६५-६६ ई. में **मिर्जा फरीकुल्लाह** ने किया। अहमद खान ने इसी समय तन्त्र सम्बन्धी संस्कृतग्रन्थ का **मिफ्ताह उल् फतह** नाम से फारसीभाषा में अनुवाद किया। इब्ने मुस्तफा ने पंचतन्त्र का अरबी अनुवाद **कलीला दामाना** के नाम से किया। तथा **खैदाद अब्बासी** ने पंचतन्त्र का फारसी में अनुवाद किया।[19] हकीमखान ने चिकित्सा सम्बन्धी ग्रन्थों का **मदनुशफाई सिकन्दरशाही** नाम से फारसीभाषा में अनुवाद किया। **अबूबक सिद्दकी** ने भी संस्कृत चिकित्सा सम्बन्धी ग्रन्थों का अनुवाद तिप्पी सिद्दीकी नाम से फारसी भाषा में किया।

पोथीरागदर्पण का अनुवाद **फकरुल्लाह** ने फारसी भाषा में किया। **मिर्जामुहम्मद बिन फखरुद्दीन** ने **मुहम्मद मोइजुद्दीन** के लिए '**तुहफ़तुलहिन्द**' का प्रणयन किया। कश्मीर के राजा **जैनुल आब्दीन** के आदेश पर **मुल्ला अहमद** ने **राजतरङ्गिणी** का फारसी अनुवाद तथा महाभारत का फारसीभाषा में अनुवाद **'तारीख़े रत्नाकर अथवा तारीख़ेशास्त्र'** नाम से किया।[20]

मुहम्मदशाह ने '**संगीतमालिका'** नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया शाहजहाँ के बड़े लड़के दाराशिकोह ने **समुद्रसङ्गम** नामक संस्कृत ग्रन्थ तथा **मज्मउल बहरैन** नामक फारसी ग्रन्थ का प्रणयन किया जिसमें उन्होंने वेदान्त के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। गोलकुण्डा के **अकबरशाह** ने सत्रहवीं शतब्दी के उत्तरार्ध में **शृंगारमजरी** का प्रणयन किया। **अब्दुर्रहीम खानखाना** ने **खेटकौकुतकम, त्रयस्त्रिंशत्द्योगावली, गङ्गाष्टकम्, मदनाष्टकम्, मेघाष्टकम्** इत्यादि संस्कृत ग्रन्थों का प्रणयन किया।

इस प्रकार हम देखते हैं की मुग़लकाल में एक विशाल संस्कृत साहित्य का प्रणयन हुआ ,जो अभी अनेक शोध संभावनाओं को समेटे होते है।

[19] मिर्जा, मुहम्मद यूसुफ, इन्फ्लूएन्स ऑफ इण्डियन साइंस ऑन मुस्लिम कलचर, भाग 3६ (१९६२), पृष्ठ ११७-११८

[20] एन.एस. शुक्ल, पर्शियन ट्रांसलेशन ऑफ संस्कृत वर्क्स स्टडीज इन इण्डोलोजी, पृष्ठ १८3-१८६